



अमीरे
अहले सुन्नत से

जिन्नात

के बारे में सुवाल जवाब

Page 22

- जिन्नात का इच्छार वापस किया ? 22
- चले में विनियोग वस्तु क्या है ? 29
- क्या सुअबू सलाम से जिन्नात विषय है ? 11
- जिन्नात से हिफज़ का कानूनी इलाज ? 14

प्रेषणकार्यालय :

मजलिमे अस परीनतुम इत्पद्धा
(दोषों का इत्तमी दृष्टिक्य)

الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلٰوٰةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ النُّبُوٰتِ
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّرِّيْنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

کتاب پढنے کی دعا

اج : شایخ ترمذی، امیر اہلے سُنّت، بانیِ دا'vatِ اسلامی، حجراۃ اعلیٰ مسلمانوں میں مولانا ابو بیلالم موسیٰ بن عاصی، امام ترمذی، امام حنبل، امام حنفی، امام شافعی، امام مالک، امام جعفر صادق، امام رضا علیہما السلام

دینی کتاب یا اسلامی سبک پڑنے سے پہلے جملے میں دی ہوئی دعا پढ لیجیے
دوسری دعا : دوسرے دعا :

اللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَإِنْشِرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَالْجَلَالِ وَالْاَكْرَامِ

ترجمہ : اے اعلیٰ اللہ ! ہم پر ایک علم کے درباراً خویل دے اور ہم پر اپنی رحمت ناجیل فرمائیں ! اے ابھیت اور بوجوگی وآلے ! (مسنطوف ج ۱ ص ۴، دارالفکر بیروت)

نوت : ابھل آخیزیر اک اک بار دوسرد شاریف پढ لیجیے ।

تالیبِ گامے مدنیا
و بکاری
و مانیکری
13 شعبان ۱۴۲۸ھ.



**نامہ رسالہ : امیر اہلے سُنّت سے
جِنَات کے بارے میں سُوال جواب**

سینے تباہ ابھی : جुمادیل ۱۴۴۴ھ، دسمبر 2022ء

تا'داد : 000

ناشر : مکتبہ تعلیم مدنیا

مدمنی ایڈیشن : کسی اور کو یہ رسالہ ٹھاپنے کی اجازت نہیں ہے ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येर रिसाला “अमीरे अहले सुनत से जिनात के बारे में सुवाल जवाब”

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरक्कत बनाया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त् में तरतीब दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएँ फ़रमाइये।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीए मक्तूब, Email या SMS) मुक्तिल फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदाबाद - 1, गुजरात।

MO. 9898732611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा : ﷺ : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़ अ़ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया)।

(تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۱۳۸ ص ۵۰ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जे हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइंडिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजू अ़ फ़रमाइये।

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ ط
أَمَّا بَعْدُ فَاعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ السَّيِّطِنِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

(ये ही रिसाला अमीरे अहले सुन्नत से जिन्नात के बारे में सुवाल जवाब
किये गए सुवालात और उन के जवाबों पर मुश्तमिल हैं)

अमीरे अहले सुन्नत से जिन्नात के बारे में सुवाल जवाब

दुआए जा नशीने अमीरे अहले सुन्नत या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 20 सफ़हात का रिसाला : “अमीरे अहले सुन्नत से जिन्नात के बारे में सुवाल जवाब” पढ़ या सुन ले उसे हर तरह की आफ़तों बलियात और शरीर जिन्नात के शर से महफूज़ फ़रमा । امين بجاہ خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم

दुरुद शरीफ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आखिरी नबी : صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : बेशक अल्लाह पाक ने एक फ़िरिश्ता मेरी क़ब्र पर मुकर्रर फ़रमाया है जिसे तमाम मख्लूक़ की ताक़त अत़ा की है, पस कियामत तक जो कोई मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ता है तो वोह मुझे उस का और उस के वालिद का नाम पेश करता है और कहता है कि फुलां बिन फुलां ने आप पर दुरुदे पाक पढ़ा है । (منذر، 4/255، حدیث: 1425)

صلوا على الحبيب ﷺ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

सुवाल : बा’ज़ लोग दम दुरुद, जिन्नात और जादू को नहीं मानते, क्या इन चीज़ों का कोई सुबूत मिलता है ?

जवाब : जो लोग दम को नहीं मानते तो एक दिन उन का अपना ही दम निकल जाता है, वाक़ेई एक ता’दाद है जो जिन्नात वगैरा के असर को नहीं

مانتی ن کیسی آمیل سے ایلات کرवاتی ہے، ہالاں کی ان پر وکرے جن کا اسسر ہوتا ہے । یاد رکھیے ! اہل دین سے مubarکہ سے جینات کا اسسر سا بیت ہے بالکل کورآنے کریم میں اک پوری سوچ کا نام ہے “سُورَةُ الْجِنِّ” ہے، اس کے ایلات بھی کورآنے کریم میں (معنی لیف مکہ مکہت پر) جینات کے تذکرے میں جو دیکھتے ہیں । لیہا جا اگر کوئی جینات کا انکار کرے گا تو کافیر ہو جائے । (فتاویٰ حدیثیہ، ص 167، بہار شریعت، 1/97، ہدیہ : 1) (ملفوظات امریکہ اہلے سุننے، 4/46)

سُوَال : جین کی ہاجیری والے سے لوگ گوچشنا یا آئندہ کی باتیں پوچھتے ہیں، کیا اس کرنا درست ہے ؟

جواب : لوگوں کو جب ما’لُوم ہوتا ہے کہ فولان پر جین آ گیا ہے تو اس سے سُوال جواب شروع کر دیتے ہیں، ہالاں کی جینات سے گئب کی باتیں پوچھنا ہرام اور شادی دھماکت ہے بالکل اگر یہ اکیدا ہوا کی جینات مسٹکیبل کی خبریں بتا سکتے ہیں تو یہ کوئی ہوگا । (فہاتا اپنی کتاب، ص 175، 179 مولخبیسنا) کیونکہ کورآنے پاک میں سراحت ہے کہ جینات کو گئب کا ایلم نہیں ہے ।⁽¹⁾

جينات کے لیے گوچشنا خبریں بتانا ممکن ہے، کیونکہ جب بچھا پیدا ہوتا ہے تو اس کے ساتھ اک جین اور اک فیرشتنا بھی پیدا ہوتا ہے، اس جین کو ہمجا د کہتے ہیں । (ص 1158، حدیث 7109) چونکہ یہ ہمجا د بچپن سے اس کے ساتھ ہوتا ہے تو اس کو بہت ساری باتیں اس شاخہ کی یاد ہوتی ہیں اور یہی ہمجا د ہاجیری والے جین کو یہ گوچشنا باتیں

1... جیسا کی ایشانی رہبا نی ہے: ﴿۰۷۰۸۱۱۴:۲۲﴾ تاریخ ماء کنعلہ علیہ السلام: جینوں کی ہکیکت خلیل گردی اگر گئب جانتے ہوتے اس خواری کے انجام میں نہ ہوتے ।



बता देता है जिस की वजह से येह जिन दुरुस्त ख़बरें दे रहा होता है। (कुफ्रिया कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 322, 323 माखूज़न) मसलन “बचपन में उस को टाईफ़ोईड हो गया था और उस के बचने की उम्मीद नहीं रही थी या डोक्टर ने ओपरेशन का कहा था मगर फुलां ने इलाज किया तो बिगैर ओपरेशन के ठीक हो गया था वगैरा” और लोग समझ रहे होते हैं कि येह बड़ा पहुंचा हुवा है। यूँ येह लोग उस जिन की बातों में आ जाते हैं हालां कि उस ने कोई गैब की बात नहीं बताई होती बल्कि माज़ी की सारी बातें उस हमज़ाद से सुन कर बताई होती हैं। मस्अला मुस्तक्बिल की ख़बरों का होता है लिहाज़ा आइन्दा की ख़बरें न पूछी जाएं कि “फुलां काम होगा या नहीं होगा, मुझे फुलां जगह नोकरी मिलेगी या नहीं मिलेगी या फुलां जगह शादी करना चाहता हूँ तो शादी होगी या नहीं, मेरा बच्चा ठीक होगा या नहीं होगा वगैरा वगैरा” येह बातें जिनात से पूछने की नहीं हैं कि इस में ईमान का ख़तरा है, क्यूँ कि अगर येह अ़कीदा रख कर पूछा कि जिनात गैब बता सकते हैं तो पूछने वाला काफ़िर हो जाएगा, मगर अफ़सोस फ़ी ज़माना जगह जगह येह कारोबार चल रहे हैं। अल्लाह पाक मुसल्मानों को इस से नजात अ़ता फ़रमाए।

अगर किसी पर सुवारी आती हो और वोह किसी बुजुर्ग का नाम ले कि मैं फुलां हूँ, तब भी किसी मज़बूत आमिल से इलाज करवा लेना चाहिये, क्यूँ कि वोह हक़ीक़त में जिन ही होता है, जब इलाज होगा तो वोह जिन भाग जाएगा। बा’ज़ अवक़ात ख़ानदान में भी इस तरह के लोग होते हैं जो सुवारी आने का झूटा दा’वा करते हैं, क्यूँ कि इस से उन की कमाई होती है वरना कम अज़ कम वाह वा तो होती ही है, क्यूँ कि लोग उन के

गिर्द जम्मू हो जाते हैं और यूं उन को मज़ा आता है। अगर ऐसों को समझाया जाए तो बुरा भला कहना शुरूअ़ कर देते हैं।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/473)

सुवाल : इन्सानों की मुख्तलिफ़ ज़बानें होती हैं। येह इर्शाद फ़रमाइये कि जिनात की ज़बान कौन सी है ?

जवाब : जिनात की भी मुख्तलिफ़ ज़बानें होती हैं, येह उर्दू, अरबी और दीगर ज़बानें भी बोलते हैं। जैसे मैं मेमन हूं लेकिन उर्दू बोल रहा हूं, इसी तरह येह भी जिस शब्द पर हावी होते हैं उस की ज़बान बोलना शुरूअ़ कर देते हैं। मुम्किन है कि उस की मादरी ज़बान कुछ और होती हो।

एक पुराना वाकिअ़ा है कि मुझे किसी मेमन आदमी के पास येह कह कर ले गए कि उस की तबीअ़त ख़राब है, मैं साथ चल पड़ा और जा कर अपनी आदत के मुताबिक़ उसे सलाम किया और मिलाने के लिये हाथ आगे बढ़ाया, लेकिन उस ने हाथ नहीं मिलाया, येह देख कर मैं चौंका कि मस्अला कुछ और लगता है, वोह लैटा हुवा था और जो भी उस पर हावी था वोह मेमनी में ही बोल रहा था, मुझे इस वक्त सारी बातें तो याद नहीं हैं, अलबत्ता उस ने कुछ इस तरह का बताया था कि मैं इस के साथ फुलां मुल्क से आया हूं और ऐसा ऐसा मुआमला हुवा था। मैं ने कहा कि तुम मुझ से अकेले मैं मिलो, तुम से अकेले बात करनी है, मस्जिद में आ जाओ। वोह बोला कि नहीं ! मस्जिद में तकलीफ़ होगी। मैं ने पूछा कि किसे तकलीफ़ होगी ? तो बोला कि इसे तकलीफ़ होगी। मैं ने पूछा : फिर कहां मिलोगे ? वोह बोला : मसान (शमशान, या'नी हिन्दूओं के मुर्दा जलाने की जगह) में मिलूंगा। इस बात से मुझे उस का मज़हब पता चल गया (या'नी वोह हिन्दू

جیں�ا) । فیر میمنی میں ہی کھنے لگا کی ہاث میلانا ہے ؟ میں نے کہا کی میں تو پھلے ہی ہاث میلا رہا�ا । فیر میں نے جسے ہی ہاث آگے کیا تو ہس نے اپنا انگوٹھا میری ہथیلی پر مارا، اس کے با'د جوڑجوڑی لی اور فیر مریجؑ نوہمیل ہو گیا । مریجؑ نے جسے ہی مुझے دے�ا تو کہا کی اللہ مَآشِئَةً ! بھی آओ ! بیٹھو، خااوے پیو । یا'نی نوہمیل ہونے کے با'د مریجؑ کو ما'لوم ہی نہیں ہوا کی میرے ساتھ کیا ہوا ہے، ہس کا جیں بھاگ گیا ہے । جس وکٹ ہس نے میری ہथیلی پر انگوٹھا مارا ہے تو میرے بدن میں بھی جوڑجوڑی داؤڈ گردی ہی اور جو شاخ میں ساتھ لے کر گیا ہے وہ بھاگ کر سیڈھی کے پاس جا کر خدا ہو گیا ہے ।

بندے کو خالی ہوشیاری نہیں کرنی چاہیے کی “اپنے کیسی کے بھاپ سے نہیں ڈرتے ।” میں تو بہت ڈرتا ہوں، اعلیٰ ہکریم اپنا اےسا ڈر اٹھا کر دے کی سارے ڈر دار بدار ہے جااں । انسان کی نفیضیت ہے کی وہ ڈرتا ہے اور اس میں کوئی ہرج بھی نہیں ہے । ابھی تو کوئوں ناوارس نے سب کو ڈرا رکھا ہے، جراسیم کا اےسا ڈر فلما ہوا ہے کی بडے بडے بھاڑوں کے پیتے پانی ہو گئے ہیں । جوڑ نہیں بولنا چاہیے کی میں کیسی سے نہیں ڈرتا ।

एک بار کیسی مالدار آدمی نے میں سے پूछا کی آپ کو تو ڈر نہیں لگتا نا ؟ میں نے کہا کی میں ڈر لگتا ہے، جبھی تو گارڈجؑ رکھے ہوئے ہیں । اگر میں ہوشیاری کرلے کی نہیں، میں ڈر نہیں لگتا تو یہ جوڑ ہو جائے । جو بولتے ہیں کی ہمے ڈر نہیں لگتا، ہنہ سوچنا چاہیے کی بیلی میاڈ کرے تو بھاگ خدے ہوں اور ابھی چوہا نیکل آئے تو سارے شرمیار خان بھاگ بھاگ کرتے فیرے । اعلیٰ بھائی جو خوافے خودا والا

है वोह सब से बड़ा बहादुर है। इन्सान को मां बाप से भी डरना चाहिये, यूँ ही उस्ताद और बुजुर्गों से भी उन के अदब की वज्ह से डरना चाहिये। बुजुर्गों से डरना बहुत अच्छा है। (مِلْكُوجَاتِ اَمْرِيَّرِ اَهْلِسُنَّةِ، 5/251)

سُعَالِ : लोग कहते हैं कि मिठाई जिन्नात की पसन्दीदा गिज़ा है क्या ये ह सहीह है?

جَواب : جِنَّاتٌ هَذِبُّيَّاً، كَوَالِيَّاً وَأَرْغَوَارَ خَاتِيَّاً (ابوداؤ، 48، حديث: 39) जिन्नात जब हङ्गमे खाते हैं तो उन्हें उन में चरबी और बोटी का Taste (या'नी ज़ाएक़ा) महसूस होता है। रही बात मिठाई की तो हम बचपन से सुनते आ रहे हैं कि जिन्नात मिठाई खाते हैं, अगर मिठाई इन की पसन्दीदा गिज़ा होती तो मिठाई की दुकान किस तरह बाक़ी रहती? क्यूँ कि सारे जिन इतने शरीफ़ तो होते नहीं कि वोह इन्सानी रूप में आएं और मिठाई ख़रीद कर ले जाएं। मेरा ख़्याल है कि अगर जिन्नात मिठाई ख़रीदना शुरूअ़ कर दें तो मिठाई का धन्दा इतना हो कि एक एक गली में बारह बारह मिठाई की दुकानें खुल जाएं क्यूँ कि एक रिवायत के मुताबिक़ इन्सानों के मुकाबले में इन की तादाद नव गुना है।

(شَيْرَ طَرِيْقَى، پ 17، الْأَنْبِيَا، تَحْتَ الْأَيْضَى: 9.96، حديث: 24803) (مِلْكُوجَاتِ اَمْرِيَّرِ اَهْلِسُنَّةِ، 2/63)

سُعَالِ : इन्सानों की मय्यित को दफ़नाया जाता है, जिन्नात की मय्यित के साथ क्या मुआमला होता है?

جَواب : एक सांप की हिकायत मिलती है कि क़फ़िले वालों ने सफ़ेद सांप को तड़पता देखा (जब वोह मर गया तो) उसे लपेट कर दफ़ना दिया तो कुछ आवाजें आईं जिन में शुक्रिय्या अदा किया गया और बताया कि ये ह एक سहाबी जिन थे जो सांप की शक्ल में ज़ाहिर हुए। (دَلَكَ النَّبُوَة لِلصَّهَابَى، ص 214، حديث: 257)

बहर हाल अब जिन्नात की तदफ़ीन वगैरा से मुतअल्लिक क्या अहङ्काम हैं इस उन्वान पर कोई किताब देखी नहीं जिस में जिन्नात के मसाइल लिखे हों। अगर कोई किताब हुई भी तो जिन्नों में ही होगी जिस से ये ह जिन्नात ही पढ़ सकते होंगे, हम को ये ह नज़र नहीं आएगी। हाँ! ऐसे मुफ़्ती हुए हैं जो जिन्नात के मसाइल भी जानते थे जैसे हज़रते इमाम (अबू हफ्स उमर बिन मुहम्मद) نسफ़ी "مُعْفَتِيَّة سَكَلَنْ" थे या'नी जिन्नात और इन्सान दोनों ही इन से फ़तवा लेते और मसाइल दरयापूत करते थे। (القولاب الْجَيِّد، ج 1، ص 194)

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 1/435)

सुवाल : क्या मुसल्मान जिन्नात को ईसाले सवाब कर सकते हैं?

जवाब : जी हाँ! मुसल्मान जिन्नात को ईसाले सवाब कर सकते हैं।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 2/428)

जिन्नात क़ाबू करने के बजाए नफ़्स को क़ाबू करना कमाल है

सुवाल : क्या आप जिन्नात को क़ाबू करने का वज़ीफ़ पढ़ने के लिये देते हैं?

जवाब : जिन्नात को क़ाबू करने का वज़ीफ़ अभी तक मैं ने भी नहीं किया और न ही मैं ने कभी जिन को कैद किया है। अगर मेरा नफ़्स मेरी कैद में आ जाए तो मुझ जैसा माहिर और बहादुर कोई नहीं होगा।

निहंगो अऱ्दहा मारा अगर्वं शेरे नर मारा बड़े मूज़ी को मारा नफ़्से अम्मारा को गर मारा

निहंग मा'ना मगरमच्छ, या'नी तू ने मगरमच्छ और शेर को मार दिया तो कोई कमाल नहीं किया, कमाल तो ये ह है कि तू अपने नफ़्स को मारने में काम्याब हो जाए।

जिन्नात काबू करना हमारी लाइन नहीं है। मुअक्किल और जिन्नात को काबू करने के लिये बा'ज़ लोग बाबा जी के पास जाते हैं तो येह खुद ही बाबा जी के कब्जे में आ कर न इधर के रहते हैं न उधर के। आ'ला हज़रत مौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा खान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ ने फ़तावा रज़िविय्या शरीफ़ में हज़रते शैख़ मुहयुद्दीन इब्ने अरबी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ का कौल नक्ल फ़रमाया है कि अगर किसी के काबू में “जिन्न” आ जाए तो कम अज़ कम वोह मुतकब्बिर और मग़र्रर हो जाता है। (फ़तावा रज़िविय्या, 21/606 माखूज़न) येह आप رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ ने अक्सरिय्यत के ए'तिबार से फ़रमाया होगा, क्यूं कि आज कल तो अगर किसी की S.H.O या थानेदार से दोस्ती हो जाए तो उस के पाउं ज़मीन पर नहीं लगते और वोह ख़ूब अकड़ कर चलता है कि मेरी S.H.O से दोस्ती है। गैर कीजिये कि जब S.H.O से दोस्ती पर येह हाल है कि पाउं ज़मीन पर नहीं लग रहे होते तो जिन्नात को काबू करने पर क्या हाल होगा।

(मल्फूज़ाते अमीरे अहले سुन्नत, 2/40)

سُوَال : कुछ लोगों का नज़रिया है कि दिन या रात में जब 12 बजें, उस वक्त कुछ लिखना, पढ़ना या मस्जिद में जाना नहीं चाहिये, वरना जिन्नात पटख़ देते हैं। क्या येह बात दुरुस्त है ?

جवाब : रमज़ान शरीफ़ में मो'तकिफ़ीन दिन रात मस्जिद में पड़े रहते हैं और रोज़ाना दो मरतबा 12 बजे का वक्त आता है, अभी तक तो किसी मो'तकिफ़ को जिन्नात ने नहीं पटख़ा और न ही कोई जिन्न पटख़ सकता है। رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ। येह सब ढकोस्ले हैं और लोगों की चलाई हुई बातें हैं। जिस को जो समझ आता है बोल रहा होता है। उलमाए किराम से पूछ कर राहनुमाई लेनी चाहिये। (मल्फूज़ाते अमीरे अहले سुन्नत, जिल्द : 10, किस्त : 243)

سُوَال : اگر کیسی بھر میں بیلیلیاں روتی اور چیخے مارتی ہوں تو لوگ کہتے ہیں کہ اس بھر میں جادو یا جینات ہے، ک्यا اس کی کوئی ہٹکتی ہے؟
جواب : ان باتوں کی کوئی ہٹکتی نہیں ہے۔ چونکہ بیلیلیاں میں بھی اپنے ساس ہوتا ہے، ان کا بھی کوئی جادو نہ کوئی ہٹکتی ہے، جبکہ تو یہ مانوس ہوتی ہے۔ کیسی کے بھر جاتی ہے تو اسی کے دروازے میں داخیل ہوتی ہے، دوسرے کے دروازے میں داخیل نہیں ہوتی، اس کا مतلب یہ ہے کہ انہیں یاد رکھتا ہے۔ بیلیلی کے رونے کا سبب یہ ہے سکتا ہے کہ کیسی جانور نے اس کے سامنے اس کا بچھا خا لیا ہے، جس کا سدمہ اس کے جیگر میں بیٹھا گیا ہے، جب اس کی یاد آتی ہے تو اس وچھ سے چیختی اور روتی ہے۔ باہر ہال بیلیلی کے رونے کی ایسی کوئی بھی وچھ ہے سکتی ہے لیہاڑا۔ بیلیلی کے رونے کا یہ ماتلب نہیں لےنا چاہیے کہ یہاں جینات ہے۔

جینات ڈمومن ہر جگہ ہوتے ہیں

جینات تو اُم تُر پر ہر جگہ ہوتے ہیں، کیونکہ ان کی تا'داب
 انسانوں کے مुکابلے میں نہ گونا جیسا داد ہے۔ یا' نی اک انسان ہے تو نہ
 (9) جن ہے۔ اس کو یون سماجیے کہ اگر دنیا میں اک کروڈ انسان رہتے
 ہے تو نہ کروڈ جن رہتے ہے۔ یاد رکھ کہ ہر جن ساتھ نہیں ہے جسے
 ہجڑاں، اسلامی بارے میں جماعت ہے کہ مدنی مسٹر کے میں
 شریک ہوتے ہے، کوئی کیسی کو تंگ نہیں کرتا، سب پور سکون بیٹھے ہوتے ہے
 تو اسی ترہ جینات بھی پور سکون ہوتے ہے۔ اعلیٰ بھائیوں کی جینات شریک
 بھی ہوتے ہے جو انسانوں کو نعمان پہنچاتے ہے۔ (جینات ہی نہیں) نعمان
 پہنچانے والے تو بھائیوں کی جینات بھی ہوتے ہے جو مجمعت میں اس تک میں ہوتے ہے
 کہ کیسی کی جے ب کاٹ لے یا کیسی کی چپلہ ٹٹا لے۔

(مالک جاتے امریکہ اہلے سุننے، 2/138)



سुواں : آج سے چند سال پہلے اُرتوں کے ساتھ جینات کے مुआملاات
�تنے جیسا دا نجرا نہیں آتے�ے جب کی آج کل یہ معاہدات جیسا دا
نجرا آتے ہیں، اس حوالے سے آپ ہماری راہنومائی فرمادیجیے ।

جواب : اُرتوں کے ساتھ جینات کے معاہدات چند سال سے نہیں بلکہ
میں بچپن سے دेखتا سونت آ رہا ہوں البत्तا سب کے ساتھ نہیں ہوتے ।
اُرتوں کو مجاہرات پر جینات کی ہاجیری آتی ہے، جس کی وجہ سے یہ
بال خوکا کر ٹھلل کوڈ کر رہی ہوتی ہیں، ان میں سے بآ'ج کے ساتھ واقعی
جین کا اسرار ہونا اور اس کی ترکی سے ستابا جانا ہو سکتا ہے جب
کی بآ'ج درامے کرتی ہوئی تو یون میکس سوڑتے ہاں ہوتی ہوئی لیہاجا
جینات کے اسرار کا بیلکول ہی انکار کر دئے کی کوئی وجہ نہیں ہے ।
بآ'ج لوگ جینات کے اسرار کا انکار کرتے ہیں مگر جب ان کے اپنے
سر پر پडتی ہوئی تو انہیں سمجھ آ جاتی ہوئی اور اگر اب بھی ن
آئے تو فیر وہ سر پٹاڈ کر مار جاتے ہوئے । یاد رکھیے । ہر
اُرط پر جینات کے اسرار ہوں یہ جڑھری نہیں، نفیسیاہی اسرار بھی
ہوتا ہے اور بآ'ج ابکاٹ اسے امراءؒ بھی لایھک ہو جاتے ہیں جس میں^۱
آدمی یہ سمجھتا ہے کہ جین کا اسرار ہو گیا ہے مسلسل کیسی کے ہاتھ
پاٹ معد جائے تو لوگ یہی سمجھے گے کہ جین کا اسرار ہو گیا ہے ہاں
کی مرجؒ کی وجہ سے بھی اسے ہوتا ہے । اُم توار پر اس ترک کے
معاہدات بابا جی لوگوں کے رہنمے کرام پر ہوتے ہیں کہ اگر یہ جین
کا اسرار کہ دے تو لوگ جین کا اسرار سمجھتے ہیں، جینات کے پورے
خاندان کا اسرار کہ دے تو پورے خاندان کا اسرار سمجھتے ہیں اور جو بھی
وجہ یہ بات دے تو لوگ وہی وجہ اپنے دل پر لے لئے ہیں । بابا جی

لोگوں کو چاہیے کہ بیلہ وہ لوگوں کو نہ دھراں۔ اُلّا جناب کے حسابت
یا ایسٹی خدا رے وہی میں اگر کوئی ایسی وہ سامنے آتی ہے تو اُسے بتانے
میں ہرج نہیں۔

(ملفوظاتِ امریکہ اہلے سุننات، 3/111)

سُوَال : مگریب کے بآ'د ڈنگ لگانا کیسا؟ نیج کیا چار سے پانچ سال
کی ٹپر کے بچوں کو ڈنگ لگا سکتے ہیں؟

جواب : مگریب کے بآ'د ڈنگ لگایا جا سکتا ہے۔ دن رات میں کوئی ایسا
وکٹ نہیں جس میں ڈنگ لگانا مनع ہے۔ چار پانچ سال کی ٹپر کے بچوں،
بُلْکَ چار پانچ دن کے بچوں، یہاں تک کہ اک دن کے بچے کو بھی ڈنگ
لگا سکتے ہیں۔ یہ گلتوں، گلتوں اور گلتوں افسوس ہے کہ مگریب کے بآ'د
خُوشبو لگانے سے یا بچے کو خُوشبو لگانے سے جنناٹ پکڑ لےتے ہیں یا
لیپٹ جاتے ہیں، اس کو چ نہیں ہے۔ اگر اسے ہوتا تو جنناٹ خُوشبو کی
ساری دُکانے لُٹ لےتے۔ ما'لوں نہیں اُن کو خُوشبو پسند بھی ہے یا نہیں؟
“فِرِيشَتَنَّ كَوَّ تُو خُوشبو پسند ہے! ” (3630: حدیث، 2/32)

(امریکہ اہلے سุننات دامتَ بَكَتُهُمُ الْعَالِيَةُ کے کریب بیٹے ہوئے مُسْفِتی ساہیب
نے فرمایا:) خُلیفہ مُسْفیتیہ آجے ہند (مائلانہ اہمداد مُکْدَم
رجُوی نوری ساہیب) کا بیان ہے کہ ہُجُور مُسْفیتیہ آجے ہند رحمةُ اللہ علیہ
فرمایا کرتے ہے: بُری اور بُدُودا ر چیزوں کی وہ سے جنناٹ چیستتے
ہیں، خُوشبو وہی کی وہ سے نہیں چیستتے۔ مگریب کے بآ'د کوچ دے کے لیے
بچوں اور اُرتوں کو باہر نیکلنے سے روکنے⁽¹⁾ کی اک وہ یہ بھی ہے

۱... فَرَمَأَنَّ مُسْكَنَهُ : جب رات کا شُرُع اُنہیں والہ وَسَلَّمَ پا اُتے تو اپنے بچوں کو روک لے، کیونکہ اس وکٹ شہزادین فلےتے ہیں۔ فیر جب رات کی
اک گھنی گوچ جاے تو بچوں کو چوڈ دے اور دروازے بند کر دے اور اُللّاہ کا نام
لے، کیونکہ شہزادین بند دروازے کو نہیں خوکلتا۔ (399: حدیث، 2/399)

کیا ٹنھے یا تو وہ دُعا اے یاد نہیں ہوتیں جو ٹنھے اے سی مخْلُوك سے بچا اے، دُسرا ٹن کے اندر پاکی کا ایتنا اہتیماماً نہیں ہوتا جیس کی وجہ سے جینات وغیرا چیست جانے کا خُترا ہوتا ہے ।

(مالکوجاۃ امریٰرے اہلے سุنّت، 4/289)

سُوْفَال : کیا فُریج یا گھر میں لیمۇن رکھنے کا کوئی فَهَا دا ہے ؟

جَوَاب : بُوچُورْگَه کا کُول ہے کیا گھر میں لیمۇن ہون گے تو شاریر جینات نہیں آتے ।

(۱۰۳ میں ایضاً کام الرجای فی) (مالکوجاۃ امریٰرے اہلے سุنّت، 4/80)

سُوْفَال : با'جُ ایک کاٹ نے گھر میں آسے ب اور جینات کا مُعَذَّب ملنا ہوتا ہے، اس کا کیا حل ہے ؟

جَوَاب : جیس گھر میں نماجِ پढی جائے، تیلابوتے اور جِنکرو ایکٹکار ہون گے تو وہ گھر بہت ساری بلالا اؤں اور آفُتوں سے بچا رہتا ہے । جب کی جیس گھر میں گانے، بآجے، فیلمے، ڈرامے، گالی گلوب اور لڈاٹ ڈنگڈے نیجِ شراب پینے جیسے گُناہ ہون گے اس میں بلالا اؤں کا جیسا دا آنا جانا رہتا ہے । اس لیے اپنے گھر کو پیارے آکڑا ﷺ کی سُنّتوں سے سجا اے، نا'ت شاریف اور تیلابوت کی آواجِ آئے، اسے شَاء اللہ إِن شَاء اللہ شہزادان باغ جائے ।

(ایس ماؤکڈ پر جا نشانے امریٰرے اہلے سุنّت نے فرمایا :) اگر جو مُعَذَّب کے دین 100 بار ”دُرُدِ تاج“ پढ کر گھر کے کوئی پر دم کر لے گے تو بھی آسے ب وغیرا دُر ہو جائے ।

تمم حِجَرَتِ مُعَذَّب اے اہم د یار خَان نَرْمِي عَنْهُ اللَّهُ رَحْمَنْ فرماتے ہیں : شہزادان سے مُرَاد مُجی زینات اور مُجی انسان دواؤں ہیں । شام کے وکُل ہی بچوں کو ڈنگوا کرنے والے جیسا دا فیکر ہے । ماجد فرماتے ہیں : ما'لُوم ہووا جینات و شیعاتین کا اس سر بچوں پر جیسا دا ہوتا ہے، اس لیے بچوں کو نیکلنے سے روکا گیا ہے । (میرआطُل مَنَاجیہ، 6/85)

(امیریٰرہ اہلے سُنّت دَامَتْ بَرَكَتُهُمُ الْعَالِيَّهُ نے فرمایا :) “**اسْهَابَهُ كَهْفُ**” کے نام اگر لیکھ کر لگا دیے جائے تو شریروں جِنّات گھر میں نہیں آتے اور اگر ہونے تو بھاگ جاتے ہیں । (شفاء، الطیل مع القول الجميل، ص 162) (ملفوظاتے امریٰرہ اہلے سُنّت، 4/352)

سُوّال : میرے بچوں کی اممی پر “جِنّ” کے اس سرّاٹ ہے، کافی ہلکا جِنّ کرવایا ہے مگر تُبی ابھر بے ہتھ نہیں ہو رہی، کوئی واجہی فکر ایسا دیجیے ।

جواب : جِنّات سے چھوٹکارا پانے کے کوئی ہلکا جِنّ نہیں ہے । ایک ہلکا جِنّ یہ ہے کہ جس پر جِنّ چढ़ جائے اس کے کان میں اجڑاں دینے سے جِنّ چلا جائے گا । (30360) (مصنف ابن ابی شیبہ، 355 / حدیث: 15) یہ بھی ہلکا جِنّ ہے کہ اندر ہر چیز پارے میں مौजود سو رے مُعْمِنُون کی آاخیری چار آیتیں (30360) (مصنف ابن ابی شیبہ، 355 / حدیث: 15) بُولَنَدَ آوازٍ سے پढی جائے تو جِنّ بھاگ جائے گا (فُتاوٰ رجُلیٰ، 1/1115) إِنْ شَاءَ اللَّهُ إِنْ شَاءَ اللَّهُ . اسی ترہ “آیتُ تُلُّ کُورسی” بھی جِنّات کا بے ہتھیں ہلکا جِنّ ہے । (مدنی پنجسُورہ، ص 15) اعلیٰہ پاک آپ کے بچوں کی اممی کو مُجذی جِنّ سے نجات بخشو ।

(ملفوظاتے امریٰرہ اہلے سُنّت، 4/142)

سُوّال : کیا جِنّات کو ہن کی اسلی سُورت میں دیکھنا مُمکن ہے ؟

جواب : جِنّات کو ہن کی اسلی سُورت میں دیکھنے یا نہ دیکھنے کے بارے میں ڈلماں کیرام کے مُعْذَلِ اکْوَال ہیں । ایک کُلے یہ بھی ہے کہ جِنّات کو ہن کی اسلی سُورت میں کوئی نہیں دیکھ سکتا (تفسیر قرطبی، پ 8، الاعراف، حَتَّى الْآيَةِ: 4-27) لیہا جا جِنّات کو دیکھنے کا شُوك نہیں ہونا چاہیے । بآج لوگ جِنّات کی تساویہ بنانا دیتے ہیں، فیر

تساہیل کے سینگ اور بडے بڈے دانت بھی بنایا دے رہے ہیں، یہ سب فرجیٰ تساہیل
ہوتی ہیں، ان تساہیل کا حکمیت سے کوئی تبلیغ نہیں ہوتا ।

(مالکوجاتہ امریر اہلے سُنّت، 7/419)

سُوْفَیْل : کیا جِنَّات اَللّٰہ پاک کی ڈبادت بھی کرتے ہیں ؟

جَنَّاَب : جی ہاں ! جِنَّات اَللّٰہ پاک کی ڈبادت بھی کرتے ہیں । چنانچہ کुرآنے پاک میں ہے : ہم نے جنہیں اور انسانوں کو اپنی ڈبادت کے لیے پیدا کیا । (351/4، ۵۶-۲۷) جِنَّات میں نا سِرْفِ مُسْلِمَان ہوتے ہیں بلکہ جِنَّات میں سہاباً بھی ہوئے ہیں، مککا مُکَرَّمَہ میں “جَنَّتُ الْأَوَّلَاءِ” کی ترکیب “مَسْجِدُ جِنَّةِ” کے نام سے اک مسجد بھی ہے جہاں جِنَّات نے سرکار ﷺ کی مُبارک جبائن سے کुرآنے کریم سُمعا تو وہ ایمان لے آئے�ے । (مالکوجاتہ امریر اہلے سُنّت، 8/346)

سُوْفَیْل : جِنَّات سے ہیفاجت کا رُحْمَانی ڈلائی ڈرشاد فرمادیجیے ।

جَنَّاَب : سوتے وکٹ پابندی کے ساتھ ہیسار کر لیا کرئے کی پ्यارے آکاڑا بھی ہیسار فرماتے ہے । اس کا تریکھ یہ ہے کہ دُعاؤں کی ترہ ہاتھ فلکا لئے فلکا لئے پھر کے ساتھ سُوراں ڈخلاں، سُوراں فلک اور سُوراں ناس شاریف پढ کر اپنی ہथیلیوں پر دم کرئے اور سارے اگلے ہیسے پر ہاتھ فرئے، فر دا اے باء، جہاں جہاں ہاتھ پھونچتا ہے وہاں ہاتھ فرئے । (مالکوجاتہ آ'lہا ہجرت، ص 338 مولاخبسان) اس ترہ کرئے تو یہ ہیسار ہو جائے گا، فر جن جادو کوئی بھی چیز ﷺ نہ اس سر انداز نہیں ہو گی । مگر یہ امداد مُسْتَکِل یا' نی بیلہ ناگا رہجانا کرئے، تلپُکُج کی اदا ائمہ اور مخادری بھی دُرُسْت ہونے چاہیے । نماز

میں بھی جیتنا پढ़نا فُرْجٌ है उतना सीखना فُرْجٌ، جیتنا پढ़نا واجب है उतना सीखना واجب، نیज़ نماज़ में हम जो सूरत या आयतें पढ़ें उन का ج़बानी याद होना भी ज़रूरी है। (ملفوظاتِ امریکہ اہل سنت، 8/90)

(م杰دِ اک مکاوم پر فرمایا:) یہ ہیساں اہل سنت سے ثابت ہے کہ 'نی خود سرکارے مدائنا صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَالْهُمَّ وَسَلِّمَ' یہ اہم لفڑا تھے۔ (بخاری، 407/3، حدیث: 5017۔ مجمُوع کبیر، 7/152) یہ اہم لفڑا سمعنے مुبارک کی نیت سے کیجیے اِن شَمْلَةَ ن کوئی جین ساتا اگا اور نہیں کوئی جاؤ اس سر کرے گا۔ (ملفوظاتِ امریکہ اہل سنت، 8/80)

سعید: اگر کوئی مکان کई مہینوں تک خالی پड़تا رہے تو کیا اس پر جینات کبھی کر لےتا ہے؟

جواب: اللہ تعالیٰ پاک بہتر جانے، ویسے یہ اہم معاشرہ ہے: "خانہ خالی را دیو می گیرد" یا 'نی "جو خالی گھر ہوتا ہے اس میں بھوت بسے رکھ لےتا ہے!" لیکن یہ سیفِ معاشرہ ہے، کوئی شارع دلیل نہیں ہے۔ جینات ویسے بھوپال کی چت پر ہوتے ہیں۔ (اصفیاء الحجج، 4/44۔ نسبۃ القاری، 351/13) یہ نجراں نہیں آتے۔ نیجے اس کو خالی گھر پر کبھی کرنے کی وجہ سے جیسا کہ جینات بھی نہیں ہوتی، اس سے ہر جین تاں نہیں کرتا بلکہ کوئی شاریر جینا ہو تو وہ ساتا ہے۔

اللہ تعالیٰ پاک اس شاریر جینات سے محفوظ فرمائے، یہ شاریر جینات کیسی جگہ ہٹا دیا جائے تو بہت پرے شان کرتے ہیں، کیونکہ یہ نجراں نہیں آتے، آدمی اس سے کیس ترکھ پیछا چھوڑا، اسے جینات بھی جہنم کے ہکدار ہے۔ نیجے جو جینات کافر ہونگے، وہ ہمہ شا جہنم

में रहेंगे और गुनाहगार मुसल्मान जिन्नात हमेशा जहन्नम में नहीं रहेंगे बल्कि अपने गुनाहों की सज़ा भुगतने के लिये जहन्नम में डाले जाएंगे।

(नुङ्हतुल कारी, 4/351 माखूज़न) (मल्फूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, 8/333)

सुवाल : हृदीसे पाक का खुलासा है कि बिगेर “बिस्मिल्लाह” पढ़े खाना खाने से शैतान उस खाने में शरीक हो जाता है जब कि उलमाएं किराम ने लिखा है कि जिन्नात की खूराक हड्डी और गोबर होती है तो शैतान जब जिन है तो फिर येह हमारे खाने में किस तरह शरीक हो जाता है ?

जवाब : ये ह कहां लिखा है कि शैतान हमारा खाना नहीं खा सकता ? ही दीसे पाक में है कि शैतान खाने में शरीक हो जाता है, जैसा कि एक बार ऐसा हुवा भी कि कोई शख्स खाना खा रहा था और उस ने “बिस्मिल्लाह” नहीं पढ़ी थी और खाने के दौरान उस को “बिस्मिल्लाह” याद आई तो उस ने कहा “بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ، صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَهُدِّي لَهُ أَوْلَاهُ وَأَخِرَهُ”， सरकारे मदीना، ये ह देख कर मुस्कुराए और फ़रमाया कि शैतान ने जो खाया था उस की उलटी कर दी । (ابوداؤد، 3/488، حديث: 3728) इस का मतलब ये है कि शैतान हमारा खाना खा सकता है । (मल्फूजाते अमरीरे अहले सन्त, 8/86)

सुवाल : मरीने के पास जो वादिये जिन हैं उस की क्या हकीकत है ?

जवाब : (अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ के क़रीब बैठे हुए मुफ्ती साहिब ने फ़रमाया :) वादिये जिन चूंकि मदीनए मुनव्वरह के कुर्ब में है, इस वज्ह से वोह मुक़द्दस मकाम है लेकिन इस वादी में ढाल के बा वुजूद चीज़ों का खुद ब खुद ऊपर की तरफ़ जाना या मदीने की तरफ़ बढ़ना किसी साइन्सी वज्ह से है। दून्या में ऐसे और भी मकामात हैं जिन में कशिश की

وَجْه سے ڈال کے با وujūd چیزوں کی طرف بढ़تی ہے۔ اس بستی کے بارے میں یہ مسحور ہے کہ یہاں جینات ہے جو چیزوں کو مدنے کی طرف ڈکھلتے ہے لیکن اس کی کوئی حکمیت نہ کہیں پڑی ہے اور نہ ہی کسی موں تک جریئے سے سुنی ہے ।

(امیر احمد سعید میں مذکور ہے) Magnet یا' نی میکناتیس کوئی تارے کی طرف جاتا ہے، اس کے بارے میں آں لاء حضرت رحمۃ اللہ علیہ نے "فُتُّوَّا رَجُّوْلِيَّا شَرِّف" میں لی�ا ہے کہ آج تک سائنس اس راجوں کو دیکھنے کا سکی کہ اس کی حکمیت کیا ہے اور میکناتیس کوئی تارے کی طرف کیون جاتا ہے؟ (فُتُّوَّا رَجُّوْلِيَّا، 29/296) اب کیا یہ کہ دیکھنا چاہیے کہ کوئی تارے پر بھی کوئی بہت بड़ا جین بیٹا ہوگا جو میکناتیس کو خینچ لےتا ہوگا! بہرہاں اس طرف کی چیزوں جو سماں نہیں آتیں یا اکٹل سے ورا ہوتی ہیں، لوگ ان کو جینات کی طرف مانسوب کر دیتے ہیں کہ وہ اس کا کر رہے ہیں۔ جینات کے وujūd کا انکار نہیں ہے، یہ کہ وہ اس کے میں مسجدے جین بھی ہے، کیونکہ اس جگہ پر سرکار ﷺ کے مубارک ہاتھ پر کوچھ جینات یہ مانا لایا ہے، اس کی یادگار کے تارے پر مسجدے جین ابھی تک کا ایم ہے جو "جننтуں مظلوم" کے کریب میں واقع ہے । (201/2، مبارکہ لارقی، اشیکا نے رسول کی 130 حکایات، ص 229) بہرہاں جینات کا وujūd یقینی ہے لیکن اس کا مطلب ہرگز یہ نہیں ہے کہ جو بھی خیل اپنے اکٹل کام ہوگا وہ جینات ہی کر رہے ہوں گے بلکہ اس کی اور وujūd کی ہو سکتی ہے ।

(ملفوظاتے امیر احمد سعید اور احمد سعید احمد، 4/101)



سوچاں : لوگ کہتے ہیں کہ “جینات سے جو دعاؤں کرવائیں جائے کبूل ہوتی ہے” کیا یہ درست ہے؟

جواب : اگر کسی نے کہ جینات سے رابطہ ہے تو اسے دعاؤں کا کہنے مें ہرج نہیں ہے، جینات کی دعاؤں بھی کبूل ہوتی ہے۔ جینات سے دعاؤں کرنا تو دور کی بات ہے، بہت سے نے کہ انسان نجیر آتے ہیں، انہی سے دعاؤں کرنا لیجیے। دعاؤں تو گناہگار شاخ کی بھی کبूل ہوتی ہے۔ ہمیشہ مولیٰ عظیم احمدیہ یا نبی موسیٰؑ نے لیکھا ہے کہ “مظلوم کافر اور مظلوم جانوار کی باد دعاؤں بھی کبूل ہوتی ہے!” (میرआтуل منانیہ، 3/300) اسی تردد جانوار کی دعاؤں بھی کبूل ہوتی ہے۔

(ملفوظاتِ امریکہ احمدیہ سونت، 4/302)

سوچاں : بولا سے کیا مुراد ہے، کیا جینات بھی بولا میں دا�یل ہے؟

جواب : ہر آفتو مسیبتو اور پرے شانی کو بولا کہ سکتے ہیں۔ جو جینات تंگ کرو، مال چورا لے یا ستابندھ تو انہیں بھی بولا کہنا درست ہے اگرچہ وہ مسلمان ہوئے یا کافر ایک ایک جو نے کہ مسلمان جینات بیلکوں بھی نہیں ستاباتے تو انہیں بولا نہیں کہ سکتے۔ امامیلوں کی یہ سلسلہ میں ناپاک جینات اسے بولتے ہیں جو کافر ہو اور پاک جینات اسے کہتے ہیں جو مسلمان ہو اگرچہ وہ ستاباتا اور لٹکا کرتا ہو لیکن مسلمان ہونے کے سبب اسے پاک جینات ہی بولتے ہیں۔ انسانوں میں بھی ڈکتی چوری یا دیگر گناہ کرنے والے مسلمان ایکی دے کے لیہاڑ سے پاک ہی کھلائے گے اگرچہ آماں کے اُتیباً سے پاک نہ ہوں۔

(ملفوظاتِ امریکہ احمدیہ سونت، 6/16)



سُعَال : کہا جاتا ہے کہ سफِّدِ مُرْغِ بَر میں رخنا چاہیے، اس سے بَلَا اَنْ تَلَتِی ہے، لے کین اگر وَه مُرْغٌ کاٹتا ہو تو کیا کرے؟

جَوَاب : جُرُّری نہیں کہ بَلَا اَنْ سِفَرْ سفِّدِ مُرْغٌ سے ہی تَلَنْ، اگر وَه کاٹتا ہے تو چُریٰ ہے کاٹ دے گی۔ اَلْبَرَّتَه هَدَیَّتَه اَوْسَطُه 677: حَدِیث (1/201) اسے مَجَّامِیَّن اَهَادِیَّتَه مُبَارَکَہ میں مُؤْجُود ہے۔ فَعَلَّمَنَ سُونَّت، جِلْدِ اَبْوَالْكَلَمِ کے بَابِ “آدَابِ تَعْبُد” میں سفِّدِ مُرْغِ کے بارے میں رِیْوَایَتِ چِنْکِر کی گردی ہے (1) (مَلْفُوزَتِ اَمَّارِیٰرے اہلے سُونَّت، 1/456)

سُعَال : جب بَچَوے بَات نہیں مانا تے تو اَمَّا تُؤْر پر ڈنھے جِنَّات سے ڈرایا جاتا ہے، مسالن کیسی کمَرے میں کوئی سَاِدِکِل یا خیلُونا رخنا ہے اور بَچَوے بار بار وہاں جاتا ہے تو کہتے ہے کہ وہاں نہیں جانا، جِنَّات آ جائے گا۔ اس تَرَه بَچَوے کو ڈرانا کیسا؟

جَوَاب : اگر اس تَرَه ڈراتے ہے تو یہ بहوت بُری بَات ہے، ڈُوٹ، ڈُوكا اور بہوت ساری خُرَابیوں کا مَجْمُوعاً بھی ہے۔ اس سے بَچَوے کے دِل میں جِنَّات کا خُوافِ بَیْت جائے گا اور بَچَوے کا Character (کِردار) تباہ ہو گا۔ بَچَوے کو ہرگیز اس تَرَه ن ڈرائے، بلکہ ان کا دِل بَدَّا رخیں اور ڈنھے بہادر بنائے۔ (مَلْفُوزَتِ اَمَّارِیٰرے اہلے سُونَّت، 3/417)

۱... دو فَرَّاجِیَّنِ مُسْتَفَضَّا : صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ (1) سفِّدِ مُرْغِ رخنا کرو، اس لیے کہ جس بَر میں سفِّدِ مُرْغٌ ہو گا تو شَرِّان اور جا دُو گر اس بَر اور اس کے یَرَبِّ بَر ن ہوں گے (677: حَدِیث 1/201) (2) سفِّدِ مُرْغٌ کو بُرا بُلَا مات کرو، اس لیے کہ یہ میرا دُوست ہے اور میں اس کا دُوست ہوں اور اس کا دُشمن میرا دُشمن ہے، جہاں تک اس کی آواز پھونچتی ہے یہ جِنَّات کو دَفَعَ کرتا ہے۔ (اقْتَرَابُ الْجَانِ فِي أَحَامِ الْأَنْسَابِ 165)

سُوَال : میرے کجیں کا موبائل گوم ہو گیا تھا، ایسٹیکھارا کرવایا تو جواب آیا کہ یہ جینات کی شرارات ہے، یہ ایسا فرمائیے کہ کیا جینات بھی اسی شرارت کر سکتے ہیں؟

جواب : اسی ہونا ممکن ہے، لیکن جُرُری نہیں کہ ہم ہر بار چوری کا ایلجنام جینات پر لگا دے۔ دو تانگ والے جینات (یا'نی چور، ڈکٹ) بھی تو گھومنے رہے ہوتے ہیں یہ بھی کسی سے کم نہیں ہوتے۔ یاد رکھیے! ایسٹیکھارا 100 فیصد یکوئی نہیں ہوتا بلکہ جُنہی ہوتا ہے، لیہاجا موبائل کی چوری کو جینات کی شرارات سمجھ کر ہاث پر ہاث رکھ کر ن بیٹھیے بلکہ موبائل تلاش کیجیے کیونکہ بآج ایکٹا بندہ ایدھر ایدھر رکھ کر بھی بھول جاتا ہے۔ (ملفوظاتے امریرے اہلے سุننات، 6/274)

نُوٹ : سلفہ 13 کا آخری سُوَال، سلفہ 14 کا پہلا سُوَال اور سلفہ 18 کا آخری سُوَال “شو'بے ملفوظاتے امریرے اہلے سُوْنَت” کی ترکیب سے کامیاب کیا گیا ہے جب کہ جواب امریرے اہلے سُوْنَت

ذَمَّتْ بِرَبِّكُمْ الْعَالِيَّهُ

کا ہی اُतھا فرمودا ہے۔



शैतान और जिन्नात से हिफाज़त

यह यह दरवाज़ा बनद करते रखा चाह कर के
लंगूरोंको लंगूर लौटिये । इसके बाद शैतान और
सरक्षा जिन्नात यह में दाखिल न हो सकेंगे ।

(Qur'an 59:17-18)

बाहर का दरवाज़ा, छुटकिलं, अल्पारी वो दरवाजे
जिसनी चाह भी खोल बनद कर नीचे लिखास, बरतान
करेंगे हर चीज़ रखते रहते हर चाह लंगूरोंको
पहुँचे वो आदा बना लौटिये । इसके बाद सरक्षा
जिन्नात आप के पार में दाखिले, चोरी और आप वो
चीजें दूरित भारा बरते से बाहु रहेंगे ।

(फ़िक्रमे गुन्त, 1/137)